फोटो: साभार डीबॉक्स

तारों में गुंथे रिश्ते

विभूति पटेल

भारतीय अमेरिकी अभिनेता रिज़वान मिर्ज़ा (ऊपर बीच में), कैरोलिन ओ'नील और हैरी सिनक्लेयर (फोटो में दाएं) कंटीन्यूअस सिटी *के लिए प्रस्तुति देते हुए।*

मैरिएन वीम्ज़ की नाटक शृंखला बताती है कि किस तरह मीडिया और तकनीक ने हमारी ज़िंदगी बदल डाली है।

वर्ष 2003 में जब अमेरिका में नौकरियों की आउटसॉर्सिंग का मसला राजनीतिक सुर्खी बना हुआ था तब नाट्य कलाकारों को अपने अनूठे काम को प्रस्तुत करने का मौका देने के लिए मशहूर न्यू यॉर्क की ब्रुकलिन एकेडमी ऑफ़ म्यूज़िक ने *अलादीन* का मंचन किया। बड़े स्तर की यह मल्टीमीडिया प्रस्तुति न्यू यॉर्क की एक प्रायोगिक थियेटर कंपनी बिल्डर्स एसोसिएशन की कला निदेशक मैरिएन वीम्ज़ की थी। इसमें अंतरराष्ट्रीय कॉल सेंटर की भूमिका की पड़ताल की गई थी जहां भारतीय ऑपरेटर इस तरह से प्रशिक्षित किए जाते हैं कि वे अमेरिकी लगें। इस अनोखी प्रस्तुति में सिनेमा का ट्रेडमार्क समझी जाने वाली तकनीक, वीडियो इमेज और कंप्यूटर स्क्रीन का इस्तेमाल किया गया था। इसने इस बात पर रोशनी डाली कि किस तरह से मीडिया और तकनीक विश्व संस्कृति को प्रभावित कर

फोटो: केन वालज़ैक

रहे हैं। इस नाटक को बेहतरीन प्रॉडक्शन के लिए ओबी पुरस्कार मिला। इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मंचित किया गया और इसने वीम्ज़ को इसका अगला भाग *सुपर विज़न* बनाने को प्रेरित किया जिसमें भी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया गया और सामरिक चुनौतियों के सवाल उठाए गए। अब इसी तर्ज़ पर *कंटीन्यूअस सिटी* प्रस्तुत कर उन्होंने अपनी प्रौद्योगिकी आधारित नाटकों की तिकड़ी बना दी है। इस नाटक को इन गर्मियों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मंचित करने से पहले हाल ही में ब्रुकलिन एकेडमी ऑफ़ म्यूज़िक के नेक्स्ट वेव उत्सव में मंचित किया गया। इस उत्सव में नए अंदाज़ वाले सामरिक प्रॉडक्शन प्रस्तुत किए जाते हैं।

बिल्डर्स की वेबसाइट इसे ''ऐसी ध्यानमग्न प्रस्तुति बताती है जो एक स्थान पर जाने और वहां से बिछुड़ने के दौरान अपने स्वयं के नेटवर्क के बहु स्थान आधारित होने से हमारे चरम सीमा तक खिंचने के सामरिक अनुभवों को प्रतिबिम्बित करती है।'' इसका तेज़ी से घूमता कथानक एक वैश्विक सेल्समैन को दिखाता है जो अपनी 11 साल की बेटी से वर्चुअल संपर्क रखता है और वे कंप्यूटर वेबकैम के जरिये बातचीत करते हैं। न्यू यॉर्क में नई आई उसकी आया शहर के बारे में ब्लॉग लिखती है। एक बहुराष्ट्रीय कारोबारी अपनी सामाजिक नेटवर्क साइट ज़ूबू को बढ़ावा देता है और अपने दूरदराज़ के दोस्तों और अपनी गर्लफ्रेंड से ऑनलाइन चैट करता है। नाटक में हर संबंध तारों की दुनिया पर चल रहा है।

वीम्ज़ कहती हैं कि उन्हें नाटक का यह आइडिया इंडियाना में रहने वाली अपनी धर्मपुत्री के साथ वेबकैम पर नियमित बातचीत करने के दौरान आया। ''हम ऐसा उस समय से कर रहे हैं जब लोला का जन्म हुआ था। अब वह सात साल की है। वह टेक्स्ट संदेश भेजना और 'कंप्यूटर पर चलो' जैसे ऑर्डर देना सीख गई है। यह ऐसा संपर्क है जो संपर्क न होने से बेहतर है। लेकिन चूंकि इसमें भागीदार लोग एक-दूसरे को गले नहीं लगा सकते और छू नहीं सकते , इसलिए इसकी सीमाएं हैं और नाटक में यह दुविधा दिखलाई देती है।''

वीम्ज़ कहती हैं, ''प्रौद्योगिकी हमें निकट लाने का आभास करा सकती है, हालांकि साथ ही यह हमें और ज्यादा दूर भी धकेल रही होती है।'' नाटक में पिता-पुत्री की कथा उदासी भरी है: लड़की अपने पिता से वर्चुअल संपर्क से बोर हो चुकी है, अकेली है और उदास है जबकि उसका पिता उससे मिलने के लिए बेताब है। लेकिन कथा वास्तविक है। बहुत से अमेरिकी दूरदराज रह रहे अपने नोती-पोतों से वीडियोकैम के जरिये ही बात करते हैं। और हम जानते हैं कि राष्ट्रपति बराक ओबामा ने जब वह दो साल तक चले प्रचार के दौरान एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहे थे तो अपनी युवा बेटियों से इसी तरह संपर्क रखा।

> ''तकनीक कहानी कहने के पैकेज के साथ आती है क्योंकि इससे लोगों की ज़िंदगी जटिल बन जाती है और हम इन्हीं चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं। यह एक तरह से समकालीन क्षण की किसी चीज़ को अभिव्यक्त करने के लिए समाज के सामने आईना रखने जैसा है।''

वाकई, स्थान का मसला वीम्ज़ के लिए मूल्यवान आइडिया बन चुका है। वह कहती हैं, ''*कंटीन्यूअस सिटी* में इस आइडिया को खंगाला गया है कि हम एक ऐसे नेटवर्क में हैं जो हर तरफ खिंच रहा है, इसको किसी तय स्थान की ज़रूरत नहीं है, पिता शहरों के भ्रम में खो गया है। उसका जुड़ाव दूरदराज घर पर रह रही अपनी बेटी से है लेकिन ऐसा जुड़ाव जो विफल है।''

दूसरी ओर पिता के बॉस, जो भारतीय अमेरिकी है और जिसकी भूमिका रिज़वान मिर्ज़ा ने अदा की है, का अपने परिवार से सकारात्मक नाता है क्योंकि वह वास्तविक दुनिया में अपने चचेरे भाईयों-भतीजों के साथ हर शाम ऑनलाइन बातचीत करता है। यह प्रौद्योगिकी के सकारात्मक पक्ष का साक्ष्य है। नाटक में जब वह अपने रिश्तेदारों के साथ चैट करता है तो एक लंदन में होता है, दूसरा वर्जीनिया में और मिर्ज़ा वहां जहां उस रात शो हो रहा होता है, वे अभिनय नहीं कर रहे, वे तीन जगहों पर हैं लेकिन फिर भी अलग नहीं हैं। इसलिए कनेक्शन, डिस्कनेक्शन और हम किस तरह लगाव बनाए रखते हैं, यह नाटक के मूल में है। मिर्ज़ा का चरित्र लगाव और प्रतिबद्धता की आशंका के चलते अपनी गर्लफ्रेंड से ऑनलाइन ही मुलाकात करता है- वह उनसे अपने वास्तविक शहर में मिलने से इनकार करता है।

वीम्ज़ और न्यूज़ीलैंड के लेखक हैरी सिनक्लेयर इस शो की शूटिंग के लिए पूरी दुनिया में घूमे। उनके वीडियो मंच पर दिखाए जाते हैं- और बेटी की कंप्यूटर स्क्रीन पर- पिता के भौतिक रूप से स्थान का पता लगाने के वास्ते। वीम्ज़ हंसते हुए कहती हैं, ''एक शहर द्वारा दूसरे की नकल मुझे काफी जंचा- शंघाई में एफ़िल टॉवर है। यह वैश्विक विस्थापन है। पहचान बदलती है, उन्हें जैसे उधार लिया जाता है और विश्व के और ज़्यादा कनेक्ट होने के चलते अपने अनुकूल बनाया जाता है।'' यह एक और आइडिया है जो नाटकों की इस तिकड़ी को आपस में जोड़ता है।

अलादीन में विस्थापन पर ध्यान केंद्रित किया गया और प्रौद्योगिकी के जरिये तीन महाद्वीपों का आपस में संपर्क बनाया गया। नाटक में एक्शन न्यू यॉर्क, लंदन और बेंगलूर के बीच आगे-पीछे होता रहता है। यह दिखाता है कि हमारी आवाज और इमेज जब पूरी दुनिया में घूमती है तो हम किस तरह प्रौद्योगिकी में उलझ जाते हैं। इस परियोजना के लिए वीम्ज़ ने लंदन आधारित कंपनी मोटीरोटी से गठजोड़ किया। इस कंपनी का संचालन कीथ खान और अली ज़ैदी कर रहे हैं। ये दोनों युवा प्रतिभाएं एक अनोखी वेबसाइट भी चला रहे हैं जिसमें अपने नाम को सार्थक करने के क्रम में करी बनाने का तरीका भी बताया गया है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

द बिल्डर्स एसोसिएशन
http://www.thebuildersassociation.org/

ग्रांडमाज ऑन कंप्यूटर स्क्रीन
http://www.nytimes.com/2008/11/27/us/27minicam.html?em=&pagewanted=all

करी बनाने की विधि
http://www.motiroti.com/play/food/recipes/index.php

रिज़वान मिर्ज़ा
http://www.aaezine.org/articles/vol21/21N4KoranicFatigue.shtml

वीम्ज़ याद करती हैं, ''मैंने लंदन में उनका काम देखा और उनकी आशावादिता का मुझ पर प्रभाव पड़ा। अमेरिका में प्रायोगिक थियेटर में कोई भी गीत और नृत्य नहीं करता।'' यह प्रशंसा दोनों ओर से है: खान और ज़ैदी ने कहा कि वीम्ज़ ने जो *जेट लैग* में किया, उससे हमें वीम्ज़ से ईर्ष्या हो रही थी। उन्होंने यह प्रस्तुति लंदन में देखी। *जेट लैग* एक दादी की सच्ची कथा पर आधारित है जिसने 125 से ज़्यादा बार अटलांटिक के पार की हवाई यात्रा की जब तक कि उसे अम्सटर्डम के एक होटल में दिल का दौरा नहीं पड़ गया और उसकी मौत हो गई। यह नाटक लगातार गतिमान रहने और भूगोल के सिमटने के बारे में है जो प्रौद्योगिकी के कारण हो रहा है।

इस आदान-प्रदान ने विभिन्न देशों के पार गहन गठजोड़ का सिलसिला शुरू किया। वीम्ज़ कहती हैं, ''हमें एक-दूसरे को देखने के लिए भी धन जुटाने की ज़रूरत पड़ती।'' अटलांटिक के आर-पार 18 महीने तक इधर-उधर होने के बाद तीनों ने अपने नाटक की सामग्री जुटा ली। वीम्ज़ स्पष्ट करती हैं, ''हमारा आउटपुट धीमा है क्योंकि मेरे प्रॉडक्ट में कई परतें हैं और यह बड़े स्तर वाला और काफी महत्वाकांक्षी है।''

अलादीन का एक दृश्य।

यह पूछने पर कि उनके नाटक नई प्रौद्योगिकी पर ही आधारित क्यों होते हैं? वीम्ज़ बताती हैं, ''मेरे लिए नई तकनीक पर जोर देने का मामला नहीं है, बल्कि मानव कथा पर जोर देने का है। इक्कीसवीं सदी में कथाएं आखिरकार किसी न किसी तरह के नेटवर्क से जुड़ी होती हैं। तकनीक इस कथा पैकेज के साथ आती है क्योंकि यह लोगों की ज़िंदगी को जटिल बनाती है और क्योंकि हम इन चीजों का इस्तेमाल करते हैं। यह एक तरह से समाज के सामने आईना रखना है जिससे कि उस चीज को अभिव्यक्त कर सकें जो इस समकालीन क्षण का हिस्सा है।''

''ये नाटक उदासी वाले और आलोचनापूर्ण है लेकिन इनमें जश्न भी है। पैदा किए जा सकने वाले दृश्यों से प्रेम है जो एक गैरमुनाफे वाली थियेटर कंपनी के लिए बहुत कुछ है। तकनीक तो यहां रहने वाली है- मेरे थियेटर में निश्चित रूप से।''

और अब वह इसके बाद क्या करना चाहेंगी? आश्चर्य नहीं कि वीम्ज़ इस बारे में कहती हैं, ''मेरी इस परियोजना के वैश्विक नेटवर्क में भारत की बड़ी भूमिका है और मेरे लिए यह मील का पत्थर होगा कि अलादीन को वहां ले जाऊं। सवाल ऐसा थियेटर तलाशने का है जो इस तरह की तकनीक इस्तेमाल करने वाली परियोजना के अनुकूल हो।''

विभूति पटेल न्यू यॉर्क में न्यूज़वीक इंटरनेशनल की कंट्रीब्यूटिंग एडिटर हैं।